© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS | Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 07 , Issue : 02 | April - June 2021

हिन्दी उपन्यासों में गाँधीवादी विचारधारा

रेनु, , शोधार्थी (पी॰एच॰डी॰, हिन्दी)
कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, एम॰ए॰, एम॰फिल॰ (हिन्दी)
नेट (जे॰आर॰एफ॰) , हिसार (हरियाणा)

शोध आलेख सार :–

उपन्यास जीवन और समाज के व्यक्त रूपों का चित्रण है। कलाकार मुख्य रूप से समाज की परिस्थितियों का परिणाम होता है और साहित्य मानव जीवन की अनुभूतियों का चित्रण। किसी भी साहित्यकार का मुख्य उद्देश्य केवल मनोरंजन न होकर षिक्षा व समाज कल्याण भी होता है।

स्वातंत्र्य संघर्ष के युग में लेखकों की रचनाओं में राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन की चेतना की झलक देखने को मिलती है। यह एक ऐसा दौर था जब सभी स्वतंत्रता सेनानी अपने देष को आजाद कराने के लिए जी–जान से जुटे हुए थे। इस युग में गाँधी जी के योगदान को भूलाया नहीं जा सकता। उस समय उपन्यासों में गाँधी दर्षन के माध्यम से समाज में जागृति की लहर लाना उपन्यासकारों का मुख्य उद्देष्य था, क्योंकि किसी भी देष के विकास को जानने के लिए उस देष का उपन्यास पढ़ना चाहिए। उपन्यासों के माध्यम से ही पाठकों को समाज की यथार्थताओं से रूबरू होने का मौका मिलता है।

हिन्दी उपन्यास का उद्भव विभिन्न विद्धान संस्कृत साहित्य की कादम्बरी व पंचतंत्र से मानते हैं सही मायने में देखा जाए तो आधुनिक उपन्यास का उद्भव पाष्चात्य षिक्षा की देन है। सामाजिक जागरण के संदर्भ में रचित अनेक उपन्यासों में गाँधी दर्शन के विविधि आयाम देखने को मिलते हैं।

ग्रामीण जागृति :–

गाँधी जी के ग्रामीण परिवेष संबंधी विचारों की छाप अनेक उपन्यासों में देखी जा सकती है। गाँधी जी गाँव को ही भारत की सच्ची आत्मा मानते थे। वे कहते भी हैं कि – ''मेरा वष चले तो मैं ऐसे ही किसी गाँव में जा कर रहूँ। वह सच्चा हिन्दुस्तान है, मेरा हिन्दुस्तान है।''[1] गाँधी जी का लगाव शहरों की बजाय गाँवों के प्रति कुछ अधिक ही था। उपन्यासकारों ने अपनी रचनाओं में महात्मा जी के विचारों व संदेषों का चित्रण किया है। गाँधी जी का मानना था कि ''हमें अपना ध्यान गाँव की ओर लगाना चाहिए। हमें गाँव को उनकी संकुचित दृष्टि, उनके पूर्वग्रहों तथा वहमों आदि से मुक्त करना है और यह सब करने का इसके सिवा कोई तरीका नहीं है कि हम उनके बीच में रहें। उनके सुख–दुख में हिस्सा लें।''[2] अनेक साहित्यकारों ने गाँधी जी के रचनात्मक कार्यों को ध्यान में रखते हुए अनेक पात्रों के माध्यम से अनेक ग्राम सभाओं में जागृति का संदेष दिया है और ग्रामीणों के अनेक कष्टों के निवारण का बड़ा सटीक उपाय बताया है। वह है– गाँधीवाद।

मन्दिर प्रवेष आन्दोलन :–

हिन्दी उपन्यासों में सबसे पहले 'जागरण' उपन्यास में दलित समस्या की ओर संकेत किया गया है। इसमें यह दर्षाया गया है कि भगवान के दरबार में पंडित व शुद्र दोनों समान होते हैं, लेकिन मनुष्य ने ही गलत नियम कानून बनाए हैं और अछूत समस्या को बढ़ावा दिया है। गाँधी जी यह मानते थे कि

मनुष्य–मनुष्य में भेद–भाव नहीं होना चाहिए। 'जागरण' उपन्याास में श्रीनाथ सिंह ने अछूत समस्या की ओर संकेत करते हुए दिखाया है– ''निकालो इसको।'' इसे तुमने कैसे यहाँ लाने का साहस किया? सारा मन्दिर अपवित्र हो गया।''[3] इस उपन्यास में पूजारी के माध्यम से बापू की अछूतों के प्रति व्यक्त भावना को दिखाया गया है, क्योंकि बापू जी कहते थे कि कोई भी धर्म ऐसा नहीं है जो मनुष्य को मनुष्य का दुष्मन बनाता हो। प्रेमचन्द जी ने भी अपने उपन्यास 'कर्मभूमि' में पात्र शान्ति कुमार के माध्यम से हरिजन–आन्दोलन की व्याख्या की है। शान्ति कुमार हरिजनों को उनके अधिकारों से रूबरू करते हुए कहता है कि – ''मंदिर किसी एक आदमी या समुदाय की चीज नहीं है वह हिन्दू–मात्र की चीज है।''[4]

भारतीय कृषक का चित्रण–

भारत को यदि शरीर मान लिया जाए तो निस्संदेह कृषक उसकी रीढ़ है। स्वतंत्रता संघर्ष के समय उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों में कृषक की दीन हीन अवस्था का बड़ा ही मार्मिक चित्रण किया है। आधुनिक युग में कृषकों की दषा में काफी सुधार हुआ है तो यह केवल समय–समय पर चलाए गए कृषकों के हित सम्बन्धी आन्दोलनों का ही परिणाम है। एक लेखक की लेखनी ही समाज में परिवर्तन लाने में सक्षम होती है। मुंषी प्रेमचन्द के उपन्यास 'प्रेमाश्रम' की रचना की प्रेरणा का कारण गाँधीवादी विचारधारा ही है। 'प्रेमाश्रम' की कथावस्तु 'खेड़ा सत्याग्रह' के निकट जान पड़ती है। उस युग में किसानों पर जमींदारों के अत्याचार दिन–ब–दिन बढ़ते ही जा रहे थे। प्रेमाश्रम उपन्यास के एक पात्र रायसाहब से उपन्यासकार ने कहलवाया भी है– ''मैं मानता हूँ कि जमींदार के हाथों किसानों की बड़ी दुर्दषा होती है, मैं बेगार लेता हूँ, डांड बीज भी लेता हूँ, बेदखली या इजाफा का कोई भी अवसर हाथ से नहीं जाने देता।''[5]

किसान की डगमगाती परिस्थितियों को देखते हुए गाँधी जी ने असहयोग आन्दोलन में किसानों को भी सम्मिलित किया था। क्योंकि उनका मानना था कि यदि देष को विदेषियों के चंगुल से छुड़ाना है तो यह केवल किसानों के बल पर ही सम्भव है।

फणीष्वरनाथ रेणु के उपन्यास मैला आंचल में 'चम्पारण सत्याग्रह' की छवि चित्रित की गई है– पूर्णिया जिले में ऐसे बहुत से गाँव और कस्बे हैं जो आज भी अपने नामों पर नीलहे साहबों का बोझ ढो रहे हैं। वीरान जंगलों और मैदानों में नील कोठी के खंडहर राही बटोहियों को आज भी नील युग की भूली हुई कहानियों की याद दिलाते हैं। गौना करके नई दुल्हन के साथ नौजवान अपने गाड़ीवान से कहता है– ''जरा गाड़ी यहाँ धीरे–धीरे हांकना, 'कनिया' साहेब की कोठी देखेगी। यही है मकें साहब की कोठी। वहाँ है नील–महने का हौज।''[6]

नारी विषयक दृष्टिकोण :–

तात्कालीन परिस्थितियों के मद्देनजर रखते हुए उपन्यासकारों ने अपनी कृतियों में नारी जागरण पर प्रबल विचार प्रस्तुत किए। नारी जिस प्रकार परिवार रूपी गाड़ी के दो पहियों के समान मानी गई है तो उसी प्रकार समाज के उत्थान के लिए भी नारी के योगदान को कम नहीं आँका जा सकता। नारी के

बिना समाज की कल्पना भी नहीं की जा सकती। गाँधी जी ने नारी के राजनीतिक जागरण में बड़ा उत्कृष्ट योगदान दिया। समय के साथ–साथ नारी ने आन्दोलनों में भाग लेना शुरू कर दिया। गाँधी जी वेष्या–प्रथा के बड़े सख्त विरोधी थे। गाँधीवादी विचारधारा प्रेमचन्द के उपन्यास सेवासदन में जोहराजान के शब्दों में दिखाई देती है, ''मैं अपनी बहनों से यही कहना चाहती हूँ कि वह आइन्दा से हलाल–हराम का ख्याल रखें। बदकार रईसों के शुहबत का खिलौना बनना छोड़ना चाहिए।''[7]

सामाजिक विकास में नारी के योगदान को दर्षाते हुए मेहता के शब्द सराहनीय हैः– ''मैं प्राणियों के विकास में स्त्री के पद को पुरूषों के पद से श्रेष्ठ समझता हूँ''[8]

अतः रचनाकारों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से नारी जागरण की बात उठाई है। कर्मभूमि की मुन्नी, रंगभूमि की इंदू, गोदान की मालती आदि नारियों ने नारी उत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

स्वदेषी भावना :–

गाँधी जी ने विदेषी वस्तुओं का बहिष्कार स्वदेशी वस्तुओं के प्रचार पर बल दिया। उनका मानना था कि जब तक लोग आत्मनिर्भर नहीं होंगे, तब तक स्वतंत्रता प्राप्त एक स्वप्न स्वरूप है। गाँधी जी द्वारा चलाए गए स्वदेशी आन्दोलन का प्रभाव सबसे पहले प्रेमचन्द जी के उपन्यास 'गबन' में दिखाई देता है। किसी भी रचनाकार की रचना तात्कालीन समाज का जीता जागता उदाहरण होती है। जब अज्ञेय जी ने अपना उपन्यास 'षेखर एक जीवनी' लिखा जो उस समय स्वतंत्रता के लिए संघर्ष बड़े जोरों पर था। अतः उन्ही परिस्थितियों के परिणामस्वरूप अज्ञेय जी ने शेखर का चित्रण इस प्रकार किया है– शेखर ने घर के सब कमरों में से विदेशी कपड़े बटोरे और नीचे एक खुली जगह ढेर लगा दिया। उस पर मिट्टी का तेल उड़ेला और आग लगा दी। और गाने लगा– ''गाँधी का बोलबाला, दुष्मन का मुँह काला।''[9]

अतः गाँधी जी के आन्दोलनों का प्रभाव अनेक उपन्यासों में दिखाई देता है।

निष्कर्ष :–

निष्कर्षतः भारतीय उपन्यासों ने राष्ट्रीय मुक्ति के आन्दोलनों की चेतना जागृत करने का बड़ा सराहनीय कदम उठाया, क्योंकि व्यक्ति, समाज और साहित्य का अटूट सम्बन्ध होता है। साहित्य न केवल भूत व वर्तमान का लेखा जोखा है बल्कि भविष्य को संवारने की शक्ति भी इसमें निहित होती है। गाँधीवादी आन्दोलन से प्रभावित होकर प्रेमचन्द जी ने प्रेमाश्रम, कर्मभूमि और रंगभूमि आदि उपन्यास लिखकर समाज में अपने विचारों व अनुभवों का प्रचार प्रसार किया।

हिन्दू और मुस्लिम एकता बापू के जीवन का मुख्य उद्देष्य था। जागरण, भाई, चंद हसीनों के खतूत, त्यागपत्र, मेरा देश, सत्याग्रह, राम–रहीम, निमंत्रण आदि उपन्यासों में गाँधीवादी विचारधारा के दर्शन होते हैं। इनमें स्वदेशी वस्तुओं के प्रचार प्रसार व विदेषी वस्तुओं का बहिष्कार, स्वदेश प्रेम की भावना, साम्प्रदायिक भावना, हिन्दू–मुस्लिम एकता, नारी जागृति के भाव, किसानों की मनोदशा का चित्रण और अछूतोद्वार समस्या को उठाया गया है। प्रायः रचनाकार ही एक ऐसा कुशल चितेरा होता है जो यथार्थ आदर्ष और कल्पना के मिले जुले संगम से व्यक्ति व समाज का सटीक चिंत्राकन करता है। अतः

भारतीय उपन्यासों में सामाजिक व सांस्कृतिक चेतना के क्रमिक विकास की कलापूर्ण अभिव्यक्ति होती है जो अपने विभिन्न दर्षनों, विचारधाराओं से ओतप्रोत होती है, अतः उपन्यास व्यक्ति व समाज का महाकाव्य होता है।

संदर्भ सूची–

1. महात्मा गाँधी, ग्राम स्वराज्य, पृ॰ 183
2. वही, पृ॰ 26
3. श्रीनाथ सिंह, जागरण, पृ॰ 139
4. प्रेमचंद, कर्मभूमि, पृ॰ 204
5. प्रेमचंद, प्रेमाश्रम, पृ॰ 63
6. फणीश्वर नाथ रेणु, मैला आंचल, पृ॰ 12
7. प्रेमचन्द, सेवासदन, पृ॰ 230
8. प्रेमचन्द, गोदान, पृ॰ 115
9. अज्ञेय, शेखर : एक जीवनी (उत्थान), पृ॰ 116